जय शंकर चौबे
jay.chaubey@azimpremjifoundation.org

जरुरी है बच्चों से बातचीत

सार

बातचीत एक ज़रिया है जिसके माध्यम से बच्चों की कल्पनाओं और सोच को विस्तार दिया जा सकता है। बातचीत से बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके तो मिलते हीं हैं साथ ही उनके अन्दर एक आत्मविश्वास भी बढ़ता है। पढ़ने-लिखने के लिए भी एक ज़मीन तैयार होती है। बच्चों के पूर्व अनुभवों को कक्षा में तवज्जो मिलने पर सीखने की गुंजाईश काफी बढ़ जाती है। सीखने का एक सरल सा मतलब यह भी होता है कि उनके अनुभवों का विस्तार हो

यह निर्विवाद सत्य है कि भाषा का ज्ञान मौखिक उच्चारित भाषा से ही प्रारम्भ होता है और बच्चा इसे सुनकर, बोलकर सीखता है। हम अपने दैनिक जीवन में मौखिक भाषा का ही अधिकाधिक प्रयोग करते हैं। स्कूली दिनचर्या में प्रवेश के समय एक बच्चे के पास मौखिक भाषा के रूप में एक अनुभव जनित पूंजी होती है। यानि यह स्पष्ट है कि भाषा शिक्षण की कक्षा में बातचीत की प्रक्रियाओं पर ध्यान देना होगा ताकि बच्चे सही व विवेकपूर्ण रूप से सुन सकें और प्रभावी रूप से अपनी बात रख सकें। बातचीत पढ़ना-लिखना सीखने के बुनियादी कौशलों को आधार देती है, साथ ही हमारे सोचने के तरीकों में भी धार लाती है।

हम सब अपने दैनिक जीवन में बातचीत करते रहते हैं। बातचीत के जरिये हम एक दूसरे को जानने समझने की कोशिश करते हैं। शैशवावस्था के दौरान अधिगम का एक महत्वपूर्ण ज़रिया होता है, बातचीत। यहाँ हम बच्चों के साथ भाषा की कक्षा में होने वाली बातचीत की प्रक्रियाओं व इसकी जरूरतों को रखने की कोशिश करेंगें।

कक्षा में बातचीत के उद्देश्य:

कक्षा में औपचारिक बातचीत का मतलब किसी निश्चित उद्देश्य के साथ बातचीत करना होता है।

- बातचीत के जरिये हम बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके देते हैं इससे उनके अन्दर एक आत्मविश्वास बढ़ता है साथ ही पढ़ना-लिखना, सीखने के लिए एक ज़मीन भी तैयार होती है।
- बातचीत के जरिये बच्चों में पढ़ने-लिखने के स्वस्थ कौशल के विकास की गुंजाईश उभरती है।
- धीरे-धीरे इस बातचीत से लेखन भी विकसित होता है।
- इससे शिक्षक व बच्चे के बीच की दूरी कम होती है। शिक्षक–विद्यार्थी के रिश्ते को यदि मधुर व मजबूत बनाना है तो कक्षा में बातचीत एक आवश्यक प्रक्रिया के रूप दिखाई देती है।
- इससे शिक्षक को बच्चों के बारे में नज़दीक से जानने के मौके मिलते हैं।
- बातचीत आकलन का एक अच्छा टूल (उपकरण) भी है। यानी बातचीत के दौरान सामने वाले की प्रतिक्रिया से उसके सोचने समझने के बारे में पता चलता है। उसके विचार का स्तर एवं सोचने की दिशा क्या है? वह बातचीत के अंश को कैसे रिलेट कर रहा है इत्यादि।

बातचीत के बारे में मान्यताएं :

शिक्षक साथियों से बातचीत के दौरान अक्सर सुनने को मिलता है कि बातचीत तो बच्चे आपस में करते ही रहते हैं। जरुरत है ध्यान से पढाई करने की। अक्सर बातचीत को शोरगुल या गप का पर्याय माना जाता है। शायद इसीलिए कक्षाओं में 'बातचीत' को तवज्जो नहीं मिल पाती है। दूसरी ओर, बातचीत के बारे में ऐसी मान्यताए हैं कि बच्चों में सुनने–बोलने की दक्षता प्राकृतिक रूप से मौजूद

है। इस पर काम करने या ध्यान देने की जरुरत नहीं है। यह स्वतः विकसित होती रहेगी।

ऐसा आभास होता है कि हम आस-पास की चीजों के विषय में निर्णयात्मक तरीके अपनाने के आदी हैं। कई बार यह भी लगता है कि चीजों को सही रूप में उभारने के लिए बच्चों के समक्ष सही सवाल रखना जरुरी होता है। यह किसी चीज को समझने में या बातचीत को आगे बढ़ाने में मददगार होता है। हम अक्सर पारिभाषिक शब्दावली या मानकात्मक अर्थ की कसौटी पर खरा उतरने पर ज्यादा जोर देते हैं। इससे भी कक्षा में बातचीत को उचित स्थान नहीं मिल पाता है। जब शिक्षक भाषा सिखाने की बात करते हैं तो पढ़ना-लिखना सिखाना यानि प्रतीकों की पहचान या प्रतीकों/लिपि को लिखने का अभ्यास एक मुख्य चुनौती के रूप में उभर कर सामने आता है। सरकारी स्कूल हों या तथाकथित अच्छे स्कूल की उपाधि प्राप्त प्राइवेट स्कूल, बातचीत की औपचारिक प्रक्रिया कक्षा शिक्षण में शामिल कम ही दिखती है।

हमें यह देखना होगा कि कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत और अन्य परिवेश में होने वाली बातचीत में थोड़ा फर्क है। कक्षा के बाहर होने वाली बातचीत अनौपचारिक होती है। इसमें सामान्यतः एक तरह की बातचीत में दूसरी बात भी शामिल होती रहती है। एक विषयवस्तु पर व्यवस्थित बातचीत कम हो पाती है। पर इसकी भी अपने आप में महत्ता है। यदि हम सहजता के साथ अपने आसपास में आपस में होने वाली बातचीत का अवलोकन करें या मिसाल के तौर पर साहित्य में जैसे 'ईदगाह कहानी में हामिद और उसके दोस्तों के बीच होने वाला वार्तालाप' इसके बेहतर उदाहरण के रूप में मिल सकते हैं। दूसरी तरफ कक्षा में बातचीत का मतलब भाषा शिक्षण की दृष्टि से एक व्यवस्थित एवं सायास प्रयास से है। इसमें किसी एक विषयवस्तु पर या विषयवस्तु के ज़रिये भाषा शिक्षण के कौशलों को विकसित करने का प्रयास करते हैं। सांकेतिक उदाहरण के तौर पर आगे उदाहरण संख्या दो देखी जा सकती है। इस उदाहरण में कहानी सुनाकर बातचीत करना साथ में चित्र बनाने और पढ़ने-लिखने के मौके देने का सायास प्रयास दिखता है।

कक्षा में बातचीत की झलक

उदहारण एक, प्रार्थना सभा के बाद बच्चे दौड़ कर या लाइनों में अपनी-अपनी कक्षा में प्रवेश करते हैं। दोनों ही स्थितियों में बच्चे खुश व उत्साहित नजर आ रहे हैं। बच्चों के चेहरे पर बचपन की चमक साफ दिख रही है। लगभग सभी स्कूलों की तरह यहाँ भी भाषा (हिन्दी) कक्षा शिक्षण पहले पीरियड से ही शुरू होता है। एक कक्ष में 16 बच्चे मौजूद हैं। कक्षा पहली–दूसरी में बोर्ड पर लिखे अक्षर पहचानने व लिखने का काम शुरू होता है। दूसरे कक्ष में तीसरी, चौथी व पाँचवीं के 15 बच्चे एक साथ बैठे हैं। इन कक्षाओं में तीसरी कक्षा की भाषा पाठ्यपुस्तक से इमला लेखन करवाया गया और बाद में अपनी–अपनी पाठ्यपुस्तक में दिए अभ्यास कार्य में दिए प्रश्नों के उत्तर लिखने का काम बच्चों को दिया गया।

कक्षा एक में अक्सर बच्चों के शोरगुल के बीच कई बार एक ही आवाज सुनाई देती है। 'बच्चों... शांत हो जाओ'..., अच्छे बच्चे कैसे होते है? फिर सभी बच्चे अपने-अपने मुंह पर अंगुली रखते हैं, कक्षा में कुछ देर तक सन्नाटा छा जाता है। बच्चे अपनी-अपनी कॉपी निकालते हैं। ब्लैक बोर्ड पर कुछ अक्षर/शब्द लिखने का काम होता है। फिर कुछ शोर होता है। पुनः बच्चों को शांत होने के लिए कहा जाता है। फिर बच्चे अपनी कापी में लिखते हैं। लिखे हुए को जांचा जाता है। इसके बाद शिक्षिका द्वारा एक कविता भी करवाई जाती है।

शुरूआती कक्षाओं में लिखना सिखाने पर ज्यादा ज़ोर होता है। फिर भी यह किसी न किसी रूप में चुनौती बना रहता है। ऐसा क्यों होता है? कहीं पढ़ना-लिखना सीखने में मददगार 'बातचीत' की प्रक्रिया को कक्षा में नज़रअंदाज़ तो नहीं कर दिया जाता। आगे बातचीत में यह भी आया कि कभी कभार कविताओं या कहानियों को बच्चों या शिक्षकों द्वारा कक्षा में सुनाने का काम तो किया जाता है पर इस पर पर्याप्त बातचीत नहीं हो पाती है।

उदाहरण दो –कक्षा एक व दो में कुल 21 बच्चे हैं। शिक्षिका ने लालू और पीलू की कहानी सुनाकर उस पर बातचीत की। *'लालू और पीलू' एक मुर्गी व उसके दो चूजों की कहानी है। जिसमें उसका एक चूज़ा (बच्चा)*

जिसका नाम लालू है उसे लाल चीज़ें बहुत पसंद हैं। एक दिन वह मिर्च के पौधे पर लगी लाल मिर्च खा लेता है। मिर्च खाने के बाद जैसा कि आमतौर पर सबके साथ होता है, लालू की भी जीभ जलने लगी। लालू रोने लगा। लालू की मुर्गी माँ दौड़ी आई। उसका भाई पीलू भी घर की ओर भागा और घर में से वह पीले-पीले गुड़ का टुकड़ा ले आया। लालू ने झट से गुड़ खाया और उसकी जलन ठीक हो गयी। अंत में जैसे सभी माँए अपने बच्चे को सीने से लगा लेती है उसी तरह मुर्गी माँ ने भी लालू और पीलू को बहुत प्यार दिया।

इस कहानी पर बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार से हैं ..

शिक्षिका : कहानी कैसी लगी ?

बच्चे : अच्छी ईईई

शिक्षिका : कहानी में कौन-कौन थे ?

बच्चे : लालू और पीलू , और मुर्गी,

शिक्षिका: मुर्गी कितने लोगों ने देखी है?

बच्चे : 8 बच्चों ने हाथ खड़े किये।

एक बच्चा : मेरे घर पर आठ मुर्गे हैं। जब कोई लेने आता है तो पापा उसे बेच देते हैं। एक लाल मुर्गा भी है। पापा को इसे बेचने को मना किया है। जब उसे पकड़ने जाता हूँ तो वह कूं-कूं करके दौड़ता है। उसके साथ दौड़ने में मज़ा आता है ...

शिक्षिका: लालू को खाने में क्या पसंद था ?

बच्चे: लाल चीज़े

शिक्षिका: लाल रंग की खाने की और क्या चीज़ हो सकती है ?

बच्चे: सेब, टमाटर, गाजर, अनार, तरबूज़, मिर्च, लीची, बालूशाही, मोतीचूर के लड्डू, कुल्फ़ी, आइसक्रीम, जामुन, गुलाब जामुन, प्याज, बेर, स्ट्राबेरी, जलेबी, इमरती, मक्का, इमली

शिक्षिका: पीले रंग की खाने की चीज़ का नाम बताइए जो आपको पसंद है?

बच्चे: संतरा, आम, केला, लड्डू, टॉफी, नमकीन, बिस्कुट, अंगूर, पपीता, पराठा

शिक्षिका: क्या कभी आपको भी मिर्च खाने के बाद जलन हुई है? यदि है हाँ, तो आपने क्या किया था?

बच्चे: कई बच्चों नें हाथ उठाये और अपने–अपने अनुभव सुनाने लगे। कई बच्चे बोले कि मैम, पानी पी लिया, चीनी खाई, मम्मी नें दो कौर और खाना खिला दिया और ठीक हो गया ..इत्यादि।

शिक्षिका बच्चों द्वारा बताये नामों को सलीके से बोर्ड पर लिखती गयी। शिक्षिका ने इन खाने वाले चीजों पर बाद में भी बात की। कहानी से जुड़ी अपनी पसंद का चित्र बनाने को कहा।

ऐसे कम अवसर मिलते हैं, जहाँ कक्षा में ऐसी बातचीत हो जो पारिवारिक बातचीत का सीधा विस्तार होती हो। ज़ाहिर है दूसरे उदाहरण में बातचीत के पुट दिख रहे हैं।

सुनने–सुनाने के मौके/ गतिविधियाँ

बातचीत के लिए जरुरी है सुनना। सुनना भी एक ध्यान क्रिया है जिसे धैर्य के साथ करना होता है। कक्षाओं में यह देखा गया कि जो बच्चा ध्यान से सुन रहा था वह शिक्षिका के साथ बातचीत में भी शामिल हो रहा था। इसलिए ऐसा लगता है कि यदि हम सुनेगें तो उस बात में या उस विचार के साथ संलिप्त भी होंगे। बशर्ते कि केवल निष्क्रिय श्रोता बनकर न सुनना पड़े। सुनना सिर्फ बच्चों के लिए हीं जरुरी नहीं है बल्कि बड़ों के लिए भी जरुरी है। सुनने का धैर्य हम बड़ों में भी कम होता है। यही कारण है कि जब किसी कार्यशाला में हमें सुनने की जरुरत पड़ती है यानी लगातार एंगेज होंना होता है तो हम उस विचार के साथ एंगेज नहीं हो पाते। क्योंकि इस तरह की बातचीत की प्रक्रिया में शामिल होने के पूर्व अनुभव कम होते हैं।

बातचीत का मतलब सुनना और उस पर सोच कर अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर करना है। कक्षा में यह देखा गया है कि जो शिक्षक बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक के अलावा भी बातचीत करते हैं, उन कक्षाओं में शिक्षक व बच्चों के बीच एक आत्मीय सम्बन्ध की झलक दिखती है। यदि हम चाहतें हैं कि बच्चों को अभिव्यक्ति के भरपूर मौके मिलें और उनमें एक आत्मविश्वास भी जगे, तो भाषा की कक्षा में कविता/कहानी सुनाना, उस पर बातचीत करना या बच्चों के अनुभवों को सुनने के साथ आस-पास की घटनाओं पर अपनी बात रखने के मौके देना, जरूरी है। कुछ गतिशील

भाव युक्त चित्र हों जिस पर पर्याप्त बातचीत की हों। बाल साहित्य को पढ़ने के मौके दिए पायें। कभी किताब पढ़ कर खुद सुनाना उस पर बातचीत करना इत्यादि मौके भी हमें ढूढ़ने होंगे। इसके लिए शुरूआती कक्षाओं में बातचीत का एक पीरियड भी बनाया जा सकता है। इससे बच्चों को और नज़दीक से जानने समझने का मौका मिलता है और उसके अनुरूप कक्षा में नए क्रियाकलापों को सम्पादित करने में मदद मिलती है|

निष्कर्ष:

इस बात पर भी ध्यान दिया जा सकता है कि स्कूल आने के पूर्व किसी भी बच्चे के अधिगम का महत्वपूर्ण ज़रिया 'बातचीत' होती है। कक्षा शिक्षण में आगे के सफ़र में इसे आधार कैसे बनाया जाय? इस पर विचार करने की ज़रुरत है। बातचीत करके ही बातचीत करना भी सीखते हैं, सोचना भी सीखते हैं। चीजें ऐसी क्यों हैं ? या किसी समस्या का समाधान कैसे होगा इस बात को भी बातचीत के जरिये सहजता से उभारा जा सकता है या समझा जा सकता है। इससे बच्चों की जिज्ञासाओं को भी तवज्जो मिलती है। कक्षा में ऐसी गतिविधियों का आयोजन हो जो 'अनुभव से अधिगम' की प्रक्रिया पर आधारित हों। बातचीत के दौरान बच्चों को अपने अनुभवों को रखने के मौके मिल रहे हों। यदि बच्चों के अनुभवों का इस्तेमाल उनके सीखने में हो यानि उनकी सोच के विस्तार करने में हो तो ज्यादा कारगर व स्वाभाविक अधिगम की संभावना रहती है।

संदर्भ

1. बिटन जेम्स (2006). *भाषा और अधिगम*, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली
2. एन.सी.ई.आर.टी. (2007). *आकलन स्त्रोत पुस्तक, नई दिल्ली*